DSPPL चैतन्य - डिजिटल न्यूज़लेटर खंड 01 अंक 01 // गुरु पूर्णिमा विशेष

DSPPL Devrukh <info.dsppl@gmail.com> Wed, Jul 13, 2022 at 1:03 PM
To: DSPPLCRP@googlegroups.com, dspplteachersassociates es <dspplteachersassociates@googlegroups.com>

गुरु पूर्णिमा का महत्व क्या है, इस बारे में बहुत से लोगों के मन में सवाल है। पूर्णिमा हमेशा से भारतीयों के लिए एक उत्सव रहा है। जैसा कि सभी जानते हैं कि साल में 12 पूर्णिमा होती हैं। हालाँकि, गुरु पूर्णिमा के दिन पूर्णिमा एक विशेष घटना है क्योंकि केवल इस दिन जो आषाढ़ महीने के 15 वें दिन आता है (हिंदू कैलेंडर में एक महीना जो आमतौर पर जुलाई के अंग्रेजी कैलेंडर महीने में आता है), आँखों से देखना मुश्किल है। जैसा कि पूरे आकाश में आमतौर पर काले बादलों का कब्जा होता है, जो इस महीने में आम तौर पर मानसून में पड़ता है। जाहिर है, इस चंद्रमा की सुंदरता को आसानी से नहीं देखा जा सकता है क्योंकि यह रहस्यमय अंधेरे के पर्दे में डूबा हुआ है । इस अद्भुत घटना को देखने के लिए बहुत धैर्य और विशेष दृष्टि की आवश्यकता होती है। कोई खो जाता है और चंद्रमा को देखना एक चुनौती बन जाता है, जैसा कि किसी ऐसी चीज को देखने की चुनौती है जो हमारे दैनिक जीवन में मौजूद नहीं है। वह स्वयं एक आध्यात्मिक अभ्यास बन जाता है। इसके लिए परम प्रकृति के एक स्वामी की आवश्यकता होती है जो आपका मार्गदर्शन कर सके और आपको वह दिखा सके जो एक सामान्य दृष्टि से परे है। गुरु ऐसा करता है।

यह दिन ऋषि व्यास का जन्मदिन भी होता है, जो एक सर्वोच्च गुरु हैं, जिनसे परास्नातक की परंपराएं उत्पन्न हुई हैं। कोई आश्चर्य नहीं कि आध्यात्मिक मार्ग पर चलने वालों के लिए यह एक विशेष दिन है। इसके अलावा, गुरु पूर्णिमा को बुद्ध पूर्णिमा के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि भगवान बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त करने के बाद इस दिन अपना पहला उपदेश दिया था।

यह वह दिन है जब एक शिष्य, अपने गुरु को मिलने के लिए, सम्मान देने के लिए जाता है, उनकी पूजा करता है और इस मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए उनका आशीर्वाद लेता है। ऐसा माना जाता है कि इस दिन साधक अपने गुरु के मार्गदर्शन में अपने चुने हुए मार्ग पर एक नई मार्ग की शुरुआत करता है. गुरु पूर्णिमा के बाद श्रावण का महीना शुरू होता है और चतुर्मास- चार महीने की कठिन तपस्या भी। इन महीनों को ध्यान और आत्मनिरीक्षण का अनुभव करने के लिए सबसे आदर्श माना जाता है। भारतीय उपमहाद्वीप में लोग इस समय तक अपना कृषि कार्य समाप्त कर लेते हैं और मानसून की प्रतीक्षा करते हैं ताकि मिट्टी को उर्वरता के साथ सशक्त बनाने के लिए उसकी देखभाल की जा सके और विभिन्न आध्यात्मिक प्रथाओं के माध्यम से अपनी आध्यात्मिक वृद्धि की तलाश की जा सके।

- अजित सर

DSPPL के प्रिय छात्रों और मेरे युवा मित्रों।

भारत के एक शहर में एक छोटा परिवार रहता था। परिवार में माता, पिता और उनके दो बेटे राजीव और रोहन थे। परिवार आधुनिक था लेकिन उन्होंने अपनी संस्कृति पर बहुत मजबूत पकड़ बनाए रखी थी। वे सभी सांस्कृतिक और धार्मिक त्योहारों को बड़े उत्साह और जोश के साथ मानते थे।

माता-पिता ने अपने दोनों बच्चों को गुरुओं और शिक्षकों को सम्मान देने के सबसे महत्वपूर्ण दिन - ***गुरु पूर्णिमा*** के लिए तैयार रहने का निर्देश दिया। राजीव और रोहन आज्ञाकारी रूप से तैयारी करने लगे और अपने शिक्षक को प्रणाम करने के लिए सहमत हो गए। बड़े भाई होने के कारण राजीव बहुत कुछ जानते थे और एक अत्यंत ज्ञानी छात्र थे। रोहन हमेशा जीवन में किसी भी स्पष्टता के लिए उसकी ओर देखता था। रोहन उसका छोटा भाई होने के कारण उसे ढेर सारे सवालों की बौछार करके उसकी जानकारी में पकड़ रहा था। आइए गुरु पूर्णिमा के बारे में बातचीत में इन दोनों युवाओ की बातचित पढ़े।

रोहन : भैया, शिक्षक दिवस हर साल 5 सितंबर को मनाया जाता है. फिर हम अलग से गुरु पूर्णिमा क्यों मनाते हैं?

राजीव: शिक्षक दिवस एक पश्चिमी अवधारणा है। भारत में, हमारे पास गुरु हैं और इसलिए यह दिन हमारे लिए अधिक महत्वपूर्ण है।
रोहन: गुरु और शिक्षक में क्या अंतर है?
राजीव: शिक्षक वह होता है जो कुछ विषयों को पढ़ा सकता है। गुरु वह है जो आपको अंधकार से प्रकाश की ओर ले जा सके। दोनों के पास गहरा ज्ञान हो सकता है और इसलिए वे हमेशा सम्मान के पात्र हैं।
रोहन : भैया, गुरु पूर्णिमा क्या भारत में ही मनाया जाने वाला त्यौहार है?
राजीव: नहीं, मेरे प्यारे, यह नेपाल और भूटान में भी मनाया जाता है।
रोहन: ठीक है, तो केवल हिंदू ही इस त्योहार को मना रहे होंगे क्योंकि महर्षि वेद व्यास का जन्म इसी दिन मान्यताओं के अनुसार हुआ था।
राजीव: बिल्कुल नहीं रोहन, यहां तक कि जैन और बौद्ध भी इसे पूरे विश्वास और भावनाओं के साथ मनाते हैं।
रोहन: भैया, कृपया मुझे महर्षि वेद व्यास के बारे में और बताएं!
राजीव: वे प्राचीन काल से एक प्रख्यात व्यक्तित्व थे; ब्रह्म सूत्र, महाभारत, श्रीमद्भागवत और 18 पुराणों जैसे अविश्वसनीय ग्रंथों के लेखक। वे ऋषि पाराशर के पुत्र थे। हिंदू शास्त्रों के अनुसार, वेद व्यास सभी काल (समय-अतीत, वर्तमान, भविष्य) के बारे में जानते थे। अपनी दिव्य दृष्टि से उन्होंने देखा था कि भविष्य में लोग उच्च ज्ञान में रुचि खो देंगे। इससे मनुष्य भगवान पर कम विश्वास करेगा, जिम्मेदारियों से बच जाएगा, और उसकी उम्र कम होगी। ऐसा व्यक्ति आसानी से पूरे वेद को नहीं पढ़ सकता। इसलिए महर्षि व्यास ने वेदों को 4 भागों में विभाजित किया; ताकि कम समझ और स्मृति वाले लोग इस ज्ञान का उपयोग कर सकें।
रोहन: तो उसका नाम वेद व्यास कैसे पड़ा? या वेदों का नाम उन्हीं के नाम पर रखा गया था?
राजीव: नहीं रोहन, प्राचीन काल के ऋषि कृतज्ञता का जीवन जीते थे। चारों वेदों के कारण ही वे वेदव्यास के नाम से प्रसिद्ध हुए।
रोहन: भैया, अगर चारों वेदों में ब्रह्मांड का पूरा ज्ञान होता? उन्होंने पुराण क्यों लिखे?
राजीव: वेदों का ज्ञान काफी रहस्यमय और थाह पाना मुश्किल था। इस प्रकार महर्षि ने पंचम वेद के रूप में पुराणों की रचना की। इन पुराणों में उन्होंने वेदों के ज्ञान को रोचक कथाओं के रूप में समझाया। उन्होंने अपने शिष्य रोमा हर्षन को पुराणों का ज्ञान दिया। व्यास जी के शिष्यों ने इन वेदों को आगे कई शाखाओं और उप-शाखाओं में विभाजित किया।
रोहन: बहुत-बहुत धन्यवाद भैया! मैं आपको अपना पहला गुरु मानता हूं। हमेशा मददगार और हमेशा ज्ञानवर्धक।
राजीव: ऐसा मत कहो रोहन। ज्ञानवर्धक एक बड़ा शब्द है। बहरहाल, मैं आपको याद दिला दूं। 13 जुलाई को गुरूजी शहर में होंगे। गुरुजी से मंत्र प्राप्त करने के लिए इस शुभ अवसर को न चूकें।
रोहन: मैं दिन और उपयुक्त समय का बेसब्री से इंतजार कर रहा हूं। जब भी वह आते हैं मुझे उनके पैरों की मालिश करना भी अच्छा लगता है।
राजीव: आपके लिए अच्छा है छोटे! त्योहार को वास्तव में शुद्ध हृदय और विश्वास के साथ मनाया जाना चाहिए। आपके पास निश्चित रूप से एक है!
रोहन : जिस तरह हमारा परिवार दिव्य स्थान से घिरा हुआ है, हम सब आनंद की ओर बढ़ रहे हैं।
राजीव: वास्तव में रोहन, हम सभी को सदा आभारी रहना चाहिए।

हमें उम्मीद है कि बातचीत का यह छोटा सा अंश आपके जीवन को और भी आनंदमय बनाने में मदद करेगा।

एक बार एक पिता और उसका पुत्र पतंगबाजी उत्सव में गए। और नन्हा बेटा रंग-बिरंगी पतंगों से भरे आसमान को देखकर बहुत खुश हुआ। और इसलिए उसने अपने पिता से एक फिरके के साथ एक पतंग लाने के लिए कहा ताकि वह भी पतंग उड़ा सके। और इसलिए पिता उस पार्क की दुकान पर गए जहां उत्सव हो रहा था। उसने अपने बेटे के लिए एक पतंग और धागे का एक रोल खरीदा। और उसका बेटा पतंग उड़ाने लगा। जल्द ही उसकी पतंग आसमान में ऊपर पहुंच गई।

थोड़ी देर बाद बेटे ने कहा: "पिताजी, ऐसा लगता है कि धागा पतंग को और भी ऊपर उड़ने से रोक रहा है, अगर हम इसे तोड़ते हैं, तो यह मुफ़्त होगा और ती और भी अधिक उड़ सकता है। क्या हम इसे तोड़ सकते हैं? तो पिता ने फिरके से धागा काट दिया और पतंग थोड़ा ऊपर जाने लगी। और इससे बेटा बहुत खुश हुआ। लेकिन फिर, धीरे-धीरे, पतंग फिर से नीचे आने लगीं। और कुछ ही देर में वह एक इमारत की छत पर गिर पड़ी। यह देखकर छोटा बेटा हैरान रह गया। उसने पतंग को उसके धागे से ढीला कर दिया था ताकि वह ऊंची उड़ान भर सके, लेकिन इसके बजाय वह नीचे गिर गई।

उसने अपने पिता से पूछा: “पिताजी, मैंने सोचा था कि धागा काटने के बाद पतंग मुक्त होगी और ऊंची उड़ान भर सकेगी। लेकिन यह नीचे क्यों गिरा?" और पिता ने समझाया: "बेटा, जिस ऊंचाई पर हम रहते हैं, हम अक्सर सोचते हैं कि हम कुछ चीजों से बंधे हैं, उससे भी आगे और उससे भी ऊपर। आप देखते हैं कि धागा पतंग को ऊपर जाने से नहीं रोक रहा था, लेकिन जब हवा धीमी हो गई तो यह उसे ऊंचा रहने में मदद कर रहा था और जब हवा तेज हो गई, तो आपने पतंग को धागे के माध्यम से उचित दिशा में ऊपर जाने में मदद की। और जब हमने धागे को काटा, तो वह बिना सहारे के नीचे गिर गया, जो आप पतंग को धागे के माध्यम से प्रदान कर रहे थे। ” अब बेटे को अपनी गलती का एहसास हुआ।

आप जीवन में देखते हैं .... अपने जीवन में कभी-कभी हमें लगता है कि यदि हम अपने परिवार के साथ अपने दोस्तों के साथ अपने घर से बंधे नहीं होते तो तेजी से प्रगति कर सकते हैं और जीवन में नई ऊंचाइयों तक पहुंच सकते हैं , लेकिन हम यह महसूस करने में विफल रहते हैं कि हमारा परिवार हमारे प्रियजन हमारे दोस्त हैं, वे मदद करते हैं हमे अपने जीवन में कठिन समय में उनके समर्थन से जीवित रखते हैं और हमें अपने जीवन में उच्च ऊंचाइयों तक पहुंचने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। वे हमें पकड़ नहीं रहे हैं। लेकिन वे हमारा समर्थन कर रहे हैं इसलिए धागे को कभी न काटें। और अपनी पतंगों को जीवन भर ऊंची और स्थिर उड़ते हुए देखें...

वीडियो के लिए लिंक: https:// youtu.be/ooO5W0jzXAQ

ईमानदारी ईश्वरीयता के समान है

कल्पना कीजिए, यदि आप गरीब हैं, अपने परिवार के एकमात्र रोटी कमाने वाले व्यक्ति हैं, संघर्ष कर रहे हैं, अपने परिवार की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए किसी भी प्रकार की दैनिक मजदूरी का काम कर रहे हैं। यदि ऐसी स्थिति में, बस स्टॉप पर एक दिन, यदि आपको 40000 रुपये नकद का एक लावारिस बंडल पड़ा हुआ मिले, तो आप क्या करेंगे?

यही स्थिति महाराष्ट्र के सतारा जिले के पिंगली गांव निवासी श्री धनाजी जगदाले की भी थी। 54 साल की उम्र, अपने गाँव के लिए बस टिकट के लिए 7 (सात) रुपये की जरूरत थी, लेकिन उसकी जेब में केवल 3 (तीन) थे, वह दहीवाड़ी बस स्टॉप पर इंतजार कर रहा था जब उसने नकदी का यह बंडल देखा। उस क्षण लालची महसूस करने के बजाय, वह उस व्यक्ति के लिए चिंतित और करुणामय महसूस करता था जिसने अपनी नकदी खो दी हो। वह इस पैसे के सही मालिक को खोजने के लिए इधर-उधर देखने लगा। थोड़ी देर बाद, वह एक ऐसे व्यक्ति से मिला, जो बहुत चिंतित दिख रहा था और कुछ खोया हुआ खोज रहा था। उसके साथ यह सत्यापित करने के बाद कि वह वास्तव में खोए हुए धन की तलाश कर रहा था, धनाजी ने नोटों के बंडल को खुशी-खुशी वापस कर दिया। दोनों खुश और संतुष्ट लग रहे थे। ये दोनों अजनबी एक दूसरे के गले मिले।

इसे पढ़ते हुए, मुझे यकीन है कि आप सोच रहे होंगे कि डिजिटल मुद्रा के इस युग में, कौन इतनी नकदी लेके घूमता है। दोनों के लिए यह और भी दिल दहला देने वाली स्थिति बन गयी, जब उस व्यक्ति ने धनाजी को सूचित किया कि उसने यह 40000 नकद रुपये बहुत प्रयासों से अपनी बीमार पत्नी की सर्जरी के भुगतान के लिए इकठा किये है। दोनों के आखो से खुशी के आंसू छलक पड़े।

उस व्यक्ति ने धानाजी को अपने ईमानदारी के प्रशंसा प्रतिक १००० रुपये देने की इच्छा व्यक्त की। , हालांकि, धनाजी ने इनकार कर दिया और सिर्फ रु 7 अपने घर जाने के लिए बस का टिकट लेकर वापस आ गया।

इस अच्छाई की खबर विभिन्न मीडिया चैनलों के माध्यम से फैल गई। सतारा के विधायक द्वारा धनाजी की सराहना की गई और उन्हें विभिन्न सामाजिक संस्थाओं द्वारा वित्तीय मदद की पेशकश की गई। अपने चेहरे पर मुस्कान के साथ, धनाजी ने सभी प्रस्तावों को अस्वीकार कर दिया और

कहा कि दुनिया के लिए उनका एकमात्र संदेश है कि लोगों को अपना जीवन ईमानदारी से जीना चाहिए।

हाँ, सच में, ईमानदारी ईश्वरीयता के समान है। काश हम सभी श्री धनाजी जगदाले से ईमानदारी का गुण सीखे और उसे अपने जीवन में धारण करें।

संदर्भ लिंक: https://www.deccanherald.com/national/west/maha-man-returns-rs-40k-with-only-rs-3-in-his-pocket-773096.html

अवश्य देखें: अपने राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण के लिए, मई 2022 में देवरुख में चिल्ड्रेन रिट्रीट प्रोग्राम के दौरान छात्रों द्वारा शपथ ग्रहण समारोह

QUIZ TIME

1. चित्र में गुरु को पहचानें:

A. शांतनु B. द्रोणाचार्य

C. वशिष्ठ D. भास्कराचार्य

2. गुरु पूर्णिमा किसका जन्मदिन है?

A. भगवान शिव B. गुरु द्रोणाचार्य

C. गुरु व्यास D. गौतम बुद्ध

3. गुरु पूर्णिमा वह दिन है जब भगवान शिव ने ज्ञान योग (योग विज्ञान) किसको दिया था?

A. वेद व्यास B. नारद

C. वाल्मीकि D. सप्तऋषि

4. गुरु पूर्णिमा किस महीने में पूर्णिमा के दिन मनाई जाती है?

A. आषाढ़ B. श्रवण

C. वैशाख D. कार्तिक

5. यहां तक कि भगवान ने भी, राम और कृष्ण के अवतारों में, एक गुरु परम्परा के तहत सीखा। इससे गुरु के महत्व का पता चलता है। राम और कृष्ण के गुरु कौन थे?

A. ऋषि बृहस्पति और ऋषि विश्वामित्र

B. ऋषि वशिष्ठ और ऋषि संदीपनि

C. ऋषि गौतम और ऋषि कृपा

D. ऋषि वेद व्यास और ऋषि वशिष्ठ

अपने उत्तर भेजें! अगले न्यूज़लेटर में सही उत्तर और विजेताओं के नाम शामिल किए जाएंगे!

संपर्क में रहिये, Quiz के सही उत्तर भेजने और हमे आपके सुझाव / राय भेजने के लिए,

info@dsppl.in or Whatsapp +918197056644

Copyrights © Devrukh Spiritual Prowess Private Limited